T.D.C. 1st Semester Examination 2016
January Session 2016-19
Sub:- Hindi (Hons.) Model Paper
Paper: 1

व्याख्या (पूरा भरती)

1. गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहुँ देस।

2. खुसरो रैन सुहाग की, जागी पी के संग।
तन मेरो मन पीउ को, दोउ भए एक रंग।

विद्यापति

(3) नंदक नंदन कदम्बक तरु-तर, धिरे-धिरे मुरलि बजाव।
समय संकेत-निकेतन बइसल, बेरि-बेरि बोलि पठाव॥

(4) चानन भेल विषम सर रे
भूषन भेल भारी।
सपनहुँ हरि नहि आयल रे
गोकुल गिरिधारी॥
एक सरि ठाढ़ि कदम-तर रे
पथ हेरथि मुरारी।
हरि बिनु हृदय दगध भेल रे
झामर भेल सारी॥

(5) सखि हे हमर दुखक नहि ओर।
ई भर बादर माह भादर
सून मंदिर मोर॥

कबीर

(6) देखादेखी भगति का कदे न चढ़ई रंग।
विपति पड्या यूँ छाड़सी, ज्यौं कैंचुली भुवंग॥

(7) जब लगि नाता जगत का तब लगि भगति न होय।
नाता तोड़ै हरि भजै भगत कहावै सोय।

(8) कामी क्रोधी लालची इनते भक्ति न होय।
भक्ति करै कोई सूरमा जाति बरन कुल खोय॥

(9) लागी लगन छूटै नहीं जीभ चोंच जरि जाय।
मीठा कहाँ अंगार में जाहि चकोर चबाय॥

जायसी

(10) बिरह भौर होइ भाँवरि देई। खिन खिन जीउ हिलोरा लेई॥

(11) प्रेम घाव-दुख जान न कोई। जेहि लागै जानै तै सोई॥

(12) सुनतहि राजा गा मुरछाई। जानौं लहरि सुरुज कै आई॥

सूर

(13) अँखियाँ हरि दरसन की भूखी।
कैसे रहैं रूप रस राँची ये बतियाँ सुनि रूखी।
अवधि गनत इकटक मग जोवत तब एती नहिं झूखी।
अब इन जोग-सँदेसन ऊधो अति अकुलानी दूखी॥

(14) कहाँ कहाँ ते आए हौ।
जानति हौं अनुमान मनो तुम जादवनाथ पठाए हौ॥
वैसेई बरन बसन पुनि वैसेइ, तन भूषन सजि ल्याए हौ॥

(15) गोपी सुनहु हरि संदेस।
कह्यौ पूरन ब्रह्म ध्यावहु, त्रिगुन मिथ्या भेष।

(16) ऊधौ तुम ब्रज की दसा बिचारौ।
ता पाछे यह सिद्ध आपनी, जोग कथा बिस्तारौ।

तुलसी

(17) तू दयालु दीन हौं, तू दानि हौं भिखारी, हौं प्रसिद्ध पातकी तू पाप पुंजहारी

(18) नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोसौं?
मो समान आरत नाहिं, आरतिहर तोसौं॥

(19) अब लौं नसानी अब न नसैहौं

(20) माधव मोह फाँस क्यों टूटै? बाहिर कोटि उपाय करिय अभ्यंतर ग्रंथि न छूटै।